International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(5): 128-130

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(5): 128-130
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-07-2018
Accepted: 27-08-2018

डॉ. श्याम बहादुर दीक्षित
सहायक अध्यापक, सर्वोदय इण्टर कालेज, लम्भुआ, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. श्याम बहादुर दीक्षित
सहायक अध्यापक, सर्वोदय इण्टर कालेज, लम्भुआ, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

जयशेखर सूरि कृत जैनकुमारसम्भव महाकाव्य का नायक और नायिका

डॉ. श्याम बहादुर दीक्षित

प्रस्तावना

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।

भारतीय काव्य शास्त्र अपने सूक्ष्म एवं गहन विचारों के लिए लोक विख्यात है। अनेक काव्यशास्त्रियों ने समय–समय पर अपने नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के सहारे इसे परिवर्तित एवं सुसज्जित किया है। पन्द्रहवीं शती के जैन आचार्य महाकवि जयशेखर सूरि उन काव्य मर्मज्ञों में विशेष स्थान रखते हैं। यद्यपि उन्होंने उन्नीस ग्रन्थों का प्रणयन किया है तथापि जैनकुमारसम्भव महाकाव्य की रचना से ही वे महाकवि की प्रतिष्ठापूर्ण पदवी से विभूषित हुए।

नायक

किसी महाकाव्य का नायक वह मूल व्यक्तित्व होता है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण कथा चक्कर लगाती रहती है और फलागम की प्राप्ति हेतु सतत प्रयत्नशील रहती है। वस्तुतः नायक के अभाव में महाकाव्य की परिकल्पना तक नहीं की जा सकती है। अनेक अलंकारिकों ने अपने–अपने महाकाव्य स्वरूप निर्धारण में नायक के अभ्युन्नति को महाकाव्य के प्रमुख तत्त्व के रूप में स्वीकार किया है। आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' और आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श'[1] में इस सन्दर्भ का स्पष्ट उल्लेख किया है। जिसमें साहित्यदर्पण के अनुसार महाकाव्य का नायक धीरोदात्तादि गुणों से युक्त सद्वंस क्षत्रिय या देव होता है[2]।

संस्कृत के प्रापणार्थक अर्थात् (नी+ण्वुल) नी धातु में ण्वुल प्रत्यय के योग से नायक शब्द और णिच् प्रत्यय जोड़ने से नेता शब्द की व्युत्पत्ति होती है।

नायक कौन है? इस प्रश्न के समाधान में आचार्य विश्वनाथ कहते हैं[2]– नायक वह है जो त्यागी, महान कार्यों का कर्ता बुद्धि वैभव से सम्पन्न रूप यौवन और उत्साह से परिपूर्ण निरन्तर उद्यमशील, जनता का स्नेह भाजन और तेजस्वरूप तथा सुशीलवान हो। यही बात दशरूपक में भी कहा गया है–

नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः
रक्तलोकः शुचिर्वाग्भी रूढवंशः स्थिरो युवा।
बुद्धयुत्साहस्मृति प्रज्ञा कलामान समन्वितः
शूरो दृढ़श्च तेजस्वी शास्त्र चक्षुश्च धार्मिकः।।

जयशेखरसूरि कृत जैनकुमारसम्भव महाकाव्य का नायक धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है। जैसा कि कवि ने अपने महाकाव्य में नायक के गुणों के विषय में संकेत किया है कि उसमें अनिवार्य रूप में दाता, कुलीन, मधुरभाषी तेजस्वी, वैभवशाली योगी तथा मोक्षकामी आदि गुणों से युक्त होना चाहिए। काव्य नायक का यह स्वरूप काव्यशास्त्र के नायक स्वरूप विधान से अधिक भिन्न नहीं है। साहित्य दर्पण में भी धीरोदात्त नायक का गुण इस प्रकार वर्णित है–

अविकत्थनः क्षमावानातिगम्भीरो महासत्त्वः।
स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढ़व्रतः कथितः।।[4]

अर्थात् धीरोदात्त नायक आत्मश्लाधा की भावनाओं से रहित क्षमावान अतिगंभीर, महासत्त्व अर्थात् हर्ष शोक आदि में अनभिभूत, स्वभावतः स्थिर और स्वाभिमानी किन्तु विनीत तथा स्वीकृत विषय का निर्वाहक होता है। जैसा कि जैन कवि ने नायक के गुणों का वर्णन किया है जिसमें अन्तिम दो गुण योगी और मोक्षकामी निवृत्तवादी विचारधारा से प्रेरित है, यही इनकी साहित्यदर्पणकार से भिन्नता भी है। यथा जैनकुमारसम्भव में स्वामी ऋषभदेव गर्भावस्था में ही ऋत्ज्ञान से युक्त हैं–

यो गर्भगोऽपि व्यमुचन्न दिव्यं
ज्ञानत्रयं केवल संविदिच्छुः।
विशेषलाभं स्पृहयन्नमूलं
स्वं संकटेप्युच्झति धीरवुद्धिः।।
मध्येनिशं निर्भर दुःख पूर्णा–
स्ते नारका अप्यदधुः सुखायम्।।
यत्रोदिते शस्तमहोनिरस्त–
तमस्ततौ तिग्मरूचीव कोकाः।।[5]

गर्भावस्था में ही वे ज्ञान से सम्पन्न तथा कैवल्य के अभिलाषी थे। उनके जन्म से जगतीतल के क्लेश इस प्रकार विलीन हो गये जैसे–सूर्योदय से चकवों का शोक तत्काल समाप्त हो जाता है। उनकी शैशवकालीन निवृत्ति से काम को अपने अस्त्रों की अमोघता पर सन्देह हो गया। मादक यौवन को धारण करते हुए भी उन्होंने अपने मन को ऐसे वश में कर लिया जैसे–कुशल अश्वरोही उच्छृंखल घोड़े को नियन्त्रित करता है–

पुरा परारोहपरा भवस्या–
वश्याः कशाकष्टमदृष्टवन्तः
बबन्धिरेऽनेन वलात्–कुरंगा
इवोल्लसन्तः शिशुना तुरंगाः।।[6]

भगवान ऋषभदेव का यथार्थ निरूपण करना वृहस्पति के लिए भी सम्भव नहीं था–

''रूपसिद्धिमपि वर्णयितु ते लक्षणकार न वाक्पतिरीशः''

स्वामी जी मृदुभाषी थे। उनकी वाणी के माधुर्य के सम्मुख अमृत नीरस प्रतीत होता था। ब्रह्मा ने चन्द्रमा का समूचा सार (अमृत) उनकी वाणी में समाहित कर दिया था–

वैधवं ननु विधि––
सारमत्र सकलं भवद्गिरि।
पूणिमोपचितदेहमन्यथा,
तं कथं व्यथयति क्षमा मयः[7]।।

स्वामी जी प्रतिभावान तथा दानी थे। उनके अविराम औदार्य के कारण कल्पवृक्ष की दान वृत्ति अर्थहीन हो गयी थी। वे अनुपम यशस्वी थे। उनकी कीर्ति का पान करके देवगण अमृत के माधुर्य को भूल जाते थे–

स्वर्गायनैः स्वर्गिपतेः सभाया,–
माविष्कृते कीर्त्यमृते तदीये।
तत्पानतस्तृष्यति नाकिलोके,
सुधा गृहीतारमृते मुधाभूत।।
मेरौ नमेरूद्रुतले तदीयं,
यशो हयास्यैरूपवोष्यमानम्।
श्रौतुं विशालाऽपि सुरैः समेतैः,
संकीर्णतां नन्दनभूरलम्भिः[8]।

भगवान् ऋषभदेव लोकोत्तर ज्ञानवान नायक है वे त्रिलोकों के रक्षक, त्रिकाल के ज्ञाता और त्रिज्ञान के धारक है–

पातुस्त्रिलोकं विदुषस्त्रिकालं,
त्रिज्ञानतेजो दधतः सहोत्थम्।
स्वाभिन्नतेऽवैमि किप्यलक्ष्यं,
प्रश्नस्त्वयं स्नेहलतैकहेतुः।।[9]

महाकवि जयशेखर सूरि द्वारा ऋषभदेव के समस्त गुणों का समाहार इस प्रकार किया गया है–

वयस्यनंगस्य वयस्यभूते भूतेश रूपेऽनुपमस्वरूपे।
पदींदिरायां कृतमन्दिरायां, को नाम कामे विमनास्त्वदन्यः।।[10]
स एव देवः स गुरूः स तीर्थं,
स मंगलं सैष सखा स तातः।
स प्राणितं स प्रभुरित्युपासा,–
मासे जनैस्तद्गतसर्वकृत्यैः।।[11]
अन्यया ऋषभदेव सदगुण–ग्रामगानपरया रयागता।
लभ्यते स्म लघु तामुपासितुं, किम न किन्नरवधूस्वशिष्यताम्।।[12]

1.	कुलीन	2.	शीलवत	3.	वयस्थ	4.	शोचवन्त	5.	संततव्यय
6.	प्राप्तिवन्त	7.	सुराग	8.	सावयन्चत्	9.	प्रियंवद	10.	कीर्तिवान
11.	त्यागी	12.	विवेकी	13.	श्रृंगारवन्त	14.	अभिमानी	15.	श्लाघ्यवन्त
16.	समुज्जवलवेष	17.	सकलकलाकुशल	18.	सत्यवन्त	19.	प्रिय	20.	अवदान
21.	सुगन्धिप्रिय	22.	सृवृत्तमन्त्र	23.	कोशसह	24.	पृदग्ध–पथ्य	25.	पण्डित
26.	उत्तमसत्व	27.	धार्मित्व	28.	महोत्साही	29.	गुणाग्रही	30.	सुपात्रग्राही
31.	क्षमी तथा	32.	परिभावुकशचेति लौकिक इत्यादि प्रकार से वर्णन किया है।						

नायिका

(ख) सुमंगला–सुनन्दा

जैनकुमारसम्भव महाकाव्य की नायिका के रूप में सुमंगला एवं सुनन्दा का वर्णन तृतीय सर्ग से लेकर एकादश सर्गांत तक है। तृतीय सर्ग के छव्वीसवे श्लोक में इन्द्र कृत प्रभु प्रशंसा के वर्णन प्रसंग में बताया गया है कि सुमंगला का जन्म प्रभु के साथ होगा और प्रभु उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करेंगे।

त्वयैव याऽभूत्सहभूरिभूमि– स्तमोविलास्येसुमंगलेति।
राकेव सा केवलभास्वरस्य, कलाभृतस्ते भजतांप्रियात्वम्।।[13]

महाकवि जयशेखरसूरि द्वारा सुमंगला–सुनन्दा के वर्णन प्रसंग में उनके गुणों का स्पष्ट संकेत किया गया है। उनका शरीर अत्यन्त सुन्दर है तथा पवित्र भावनाओं वाली, उत्तम गोत्र वाली, मेघ के तुल्य केश समूह वाली तथा कमल के समान मुखों वाली हैं। उनके कुच युगल पर कामदेव को क्रीड़ा करता हुआ बताया गया है। श्वेत, निर्मल एवं मनोहर वस्त्र को धारण करने पर वे स्फटिक के मियान में सुनहरी तलवार लिए हुए कामदेव व रति के तुल्य दृष्टगत होती हैं।[14]

साहित्यदर्पण में वर्णित नायिका भेद विश्लेषण के अनुसार उन्हें स्वकीया मुग्धा नायिका के अन्तर्गत रखा जा सकता है। जिसमें लक्षण निम्नवत है : प्रथमाऽवतीर्णयोवना, प्रथमावतीर्णमदनविकारा,

रमण में प्रतिबन्ध डालने वाली, अभिमान करने में कोमल स्वभाववाली और अधिक लज्जा से युक्त स्त्री (स्वकीया) मुग्धा है।[15] वह सुमंगला पतिव्रत को धारण करने वाली, मोक्षकामी लौकिक काम प्रवृत्ति से विमुख एवं अलौकिक काम प्रवृत्ति वाली हैं जिसके साथ भगवान ऋषभदेव पूर्वजन्म भोगस्वरूप अनासक्त भाव से भोग क्रिया में संलग्न हुए–

''भोगार्हकर्मध्रुववेद्यमन्य–जन्मार्जितं स्वं स विभुर्विवुध्य।
मुक्त्येककामोंऽप्युचितोपचारै–रभुङ्क्त ताभ्यां विषयानसक्तः''।।[16]

विभिन्न प्रकार से रति–विलास करने के उपरान्त सुमंगला गर्भधारण करती है–

''कौमारकेलिकलनाभिरमुष्य पूर्व–लक्षाः षडेकलवतां नयतः सुखाभिः।
आद्या प्रिया गरभमेणदृशामभीष्टं, भर्तुः प्रसादमविनश्वर माससाद''।।[17]

अपने स्फठिक भवन में निवास करती हुई सुमंगला एक दिन निद्रावस्था में चौदह प्रकार के स्वप्नों का दर्शन करती है। जो क्रमशः इस प्रकार है–यमराज के समान हाँथी, कैलास के समान सींग वाला वृषभ, सिंह, लक्ष्मी, अतुलनीय पुष्पमाला, चांदनी से युक्त मुख में प्रवेश करता हुआ चन्द्रमा, हृदय रूपी कमल को विकसित करता हुआ सूर्य, ध्वज, कुम्भ, पद्म–सरोवर, सागर, आकाश में स्थित देवविमान, दुर्लभ रत्न राशि, कान्तियुक्त अग्नि ये चौदह स्वप्न देखे गये।[18]

उपर्युक्त स्वप्नों को देखकर वह अत्यन्त भयभीत हो गयीं और उसी समय असमय में ही पति (ऋषभदेव) के मणिमय निवास गृह में जाती हैं। सुमंगला को असमय आते हुए देखकर भगवान ऋषभदेव बड़े सोच–विचार में पड़ जाते हैं और सुमंगला के विषय में नाना प्रकार की कल्पनाएं करने लगते हैं। परन्तु सुमंगला द्वारा स्वप्नों का यथावत् वर्णन करने पर भगवान ऋषभदेव स्वप्न विचार करते हैं तथा उसकी महत्ता का वर्णन करते हैं कि हे विचक्षण सुमंगला उत्तम फल देने में समर्थ यह स्वप्न हमारे हृदय को हर्ष से उल्लसित कर दिया है।[19] इस प्रकार उसकी महिमा का वर्णन करते हैं। इसके पश्चात् नवें सर्ग में उन चौदह स्वप्नों में प्रत्येक का फल निर्देश करते हैं–पृथ्वी पर चार पैरों वाले वृषभ के रूप में प्रतिष्ठित तुम्हारा पुत्र सहस्त्र वोधी सुभट अर्थात् योद्धा और सेना के सम्मुख ऐरावत हाँथी के समान होगा तथा रणभूमि में सिंह के समान, धन सम्पत्ति में कल्पवृक्ष के तुल्य और पुष्पमाला–कीर्ति रूपी सुगन्ध से चारों दिशाओं को व्यक्त करता हुआ, हमेशा पृथ्वी को हर्षित करते हुए चन्द्रमा के समान सुन्दर जैसे अनेक कला समूह से युक्त होता है। सूर्य के समान तेज वाला होगा।[20]

इस प्रकार पति ऋषभदेव के द्वारा ''स्वप्न फल'' को सुनने के बाद वह अत्यन्त हर्षित होती हैं तथा उनके वाणी की महिमा का वर्णन करती हैं।[21] तदुपरान्त दशवें सर्ग में ही गर्भिणी सुमंगला के विषय में उनकी सखियों के बीच आलाप–प्रत्यालाप होता है। फिर एकादश सर्ग में इन्द्र का आगमन होता है और उनके द्वारा सुमंगला की प्रशंसा की जाती है। इन्द्र कहते हैं कि हे सुमंगला–तुम्हारा पुत्र ''भरत'' नाम धारण करेगा तथा यह पृथ्वी (उसी के नाम से) ''भारती'' के नाम से विख्यात होगी जिसका वह स्वामी होगा।

''आस्मिन दधाने भरता भिधान–
मुपेष्यतो भूमिरियं च गीश्च।
विद्युद्भुवि स्वात्मनि भारतीति,
ख्यातौ मुदं सत्प्रभुक्ताभजन्माम्।।[22]

तदुपरान्त इन्द्र का प्रस्थान होता है और इन्द्र के चले जाने पर सुमंगला दुःखी हो जाती हैं। इसके बाद सुमंगला का सखियों द्वारा स्नानादि कराया जाता है तथा काव्य समाप्त हो जाता है।

इस प्रकार सुमंगला सुन्दर गुणों से युक्त, पति के प्रति स्नेह, आगन्तुकों के प्रति भक्ति भाव, सखियों के प्रति स्नेह रखने वाली, पति पर पूर्ण भरोसा रखने वाली, धर्मनिष्ठ, बुद्धिमान, अतिसुन्दर यशस्वी पुत्र प्राप्त करने वाली, धैर्य धारण करने वाली आदि गुणों से युक्त होकर काव्य की मुख्य नायिका के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. चतुरोदात्त नायक.....
   सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः
   सद्वंशः क्षत्रियां वापि धीरोदात्त गुणान्वितः।
   एकवंशः भवाभूपा कुलजा बहवोपि वा।। काव्यादर्श 1/15
2. त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयोवनोत्साही।
   दधोनुरक्ता लोकस्तेजो वैदग्ध्य शीलवान्नेता
   साहित्यदर्पण–3/33
3. दशरूपक पृष्ठ–109
4. साहित्यदर्पण–3/32
5. जैनकुमारसम्भव–1/18–21
6. जैनकुमारसम्भव–1/36
7. जैनकुमारसम्भव–5/56
8. जैनकुमारसम्भव–1/69–70
9. जैनकुमारसम्भव–8/19
10. जैनकुमारसम्भव–3/24
11. जैनकुमारसम्भव–1/73
12. जैनकुमारसम्भव–10/68
13. जैनकुमारसम्भव–3/26
14. तनुस्तदीया.....मनोभवस्य।
    जैनकुमारसम्भव–3/68
15. प्रथमावतीर्णयोवनमदनविकारा रतौ वामा।
    कथिता मृदुश्च माने समधिक लज्जावती मुग्धा ।।
    साहित्यदर्पण–2/58
16. जैनकुमारसम्भव–6/26
17. जैनकुमारसम्भव–6/74
18. जैनकुमारसम्भव–7/24–51
19. जैनकुमारसम्भव–8/55–60
20. जैनकुमारसम्भव–9/1–51
21. जैनकुमारसम्भव–10/4–16
22. जैनकुमारसम्भव–11/43